मानव कल्याण और विश्वशांति के पृष्ठपोषक कवि गिरिजाकुमार माथुर

डॉ अलका गुप्ता,

शहीद सुखदेव कालेज आफ बिजनेस स्टडीज,

दिल्ली विश्वविद्यालय, अतिथि संकाय

सार

अखिल मानवता के कल्याणार्थ चिंतित एवं समस्त वैश्विक परिदृश्य को विश्व बंधुत्व और वसुधैव कुटुंबकम् के भाव से सवंलित नयी कविता के अग्रणी कवि गिरिजा कुमार माथुर ने विश्व बंधुत्व और मानवता को असीम परिमितियां प्रदान की है।

कुजी शब्द

मानवता, बंधुत्व, अखिल, पृष्ट , पोषक, गाथा, मनुज, मन्वन्तर जीवन डोरों, अणु छत्रों इत्यादि।

एक सजग एवं सच्चे कवि की चेत्ना देश की सीमाओं को लांघकर संपूर्ण विश्व की समस्याओं से प्रभावित होती है । वर्तमान में सूचना और तकनीक के बढ़ते उपयोग तथा आर्थिक वैश्वीकरण के युग में एक देश की समस्या दूसरे देशों के जनजीवन को प्रभावित करती हैं। अतः कविता को किसी एक राष्ट् की सीमाओं में आबद्ध करके नहीं देखा जा सकता। गिरिजाकुमार माथुर जैसे संवेदनशील कवि की रचनाओं में संकीर्ण राष्ट्रीयता की अपेक्षा विश्वकल्याण और मानवीयता के भाव अधिक गहरे दृष्टिगोचर होते हैं। इनकी सामाजिक दृष्टि व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की सीमाओं को पार कर अंतरराष्ट्रीय भूमि पर पहुंचती है। उन्होंने संपूर्ण मानवता को एक सामंजस्य अविभाजित इकाई के रूप में देखा है।उनकी नजर में संपूर्ण विश्व अंगी है। उसके किसी भी अंग की कोई विकृति या दुख-दर्द उनकी सहानुभूति का विषय है। उन्होंने समस्त विश्व को अखंड रुप में देखा है और उसकी आत्मा को अभिव्यक्ति दी है। माथुर जी ने' बर्फ का चिराग', ""एशिया का जागरण," ''नई भारती '''ढाक बनी माटी मेघ, 'अदन पर बम वर्षा' ',भोर: एक लैंड स्केप , पन्द्रह अगस्त आदि कविताओं तथा' पृथ्वीकल्प ' गीतिनाट्य में मानवतावादी दृष्टिकोष उभरकर आया है ।'

'ढाक बनी 'कविता में प्रकृति का सौंदर्याकन करते हुए कवि यह सोचकर दुखी हो उठता है कि यह विश्व अथाह प्राकृतिक संसाधनों से संपन्न है पर उनका संपूर्ण और उचित उपयोग न हो पाने के कारण आज का आदमी भूख की मनहूस छाया के धेरे में आबद्ध है -------- " भूख की मनहूस छाया, जबकि भोजन सामने हो ,आदमी हो ठीकरे सा ,जब कि साधन सामने हो, घन वनस्पति भरे जंगल , और यह जीवन भिखारी. 1

1.धूप के धान, गिरिजा कुमार माथुर,ढाक बनी, पृष्ठ92

आज की निरंकुश तानाशाही और साम्राज्यवाद के पोषक शासकों के अत्याचारों ने मानवता का सीना तार-तार कर दिया है । पराधीनता की बेडियों से मुक्ति के लिए मानवता जूझ रही है। सहदय कवि की पीड़ा एक टीस के रूप में इन पंक्तियों में अभिव्यक्त हुई है.------- "मेरी मानवता पर रक्खा गिरि सा सत्ता का सिंहासन ,मेरी आत्मा पर बैठा है विषधर-सा सामंती शासन ,मेरी छाती पर रक्खा हुआ साम्राज्यवाद का रक्त कलश मेरी धरती पर फैला है मन्वंतर बनकर मृत्यु दिवस , तेरी जंजीरों में बंधकर कंकाल हुई मेरी काया ".2.धूप के धान,- एशिया का जागरण, पृष्ठ11

सामाजिक और आर्थिक असमानता के कारण आज समाज में तीन वर्ग बन गए हैं -उच्चवर्ग, मध्यमवर्ग और निम्न वर्ग। वैज्ञानिक प्रगति के इस युग मे जहां एक वर्ग हवाई जहाज के मजे ले रहा है, तो वहीं एक अन्य वर्ग के लोगों को एक समय का भोजन भी ठीक से मयस्सर नहीं। आर्थिक विपन्नता से उन लोगों के लिए अपना जीवन भी भार हो गया है। एक और रेशमी पर्दों में आलीशान जीवन और दूसरी तरफ फुटपाथ पर पुलिस की ठोकरें खाती जिंदगी है। माथुर जी की पीड़ा घनीभूत होकर भूख से मरती जिंदगी के लिए उमड़ पड़ी है।" शाम हो रही जाड़ों की " में सृजनकर्ता की संवेदनाएं यहां संवेदित हो उठी हैं ----

उस खिड़की के रेशम पर्दे मैं से आती ड्रेस बूट की गूंज ,साड़ियों की मृदु सरसर , चम्मच प्लेटों की हल्की मीठी टंकारे, एक पहर से देख रहा हूँ बुझता सूरज ,मरता सूरज, हत्यारों को खाने वाला भूखा सूरज --- देख रहा हूँ, लाल हुई मखमल की कुर्सी , मेज पर का वह दैनिक, जिसकी सुर्खी लौ से उठकर अविरल दुहराती जाती है कलकते के फुटपाथो पर दो सौ भूखे और मर गए'

. 3नाश और निर्माण, गिरिजा कुमार माथुर ,शाम हो रही जाड़ों की, पृष्ठ 116

बीसवीं सदी मानव के विकास और युद्धोन्माद की रही है। भौतिक विकास ने आदमी को स्वार्थी और आत्मकेंद्रित बना दिया है। राजनीति और धर्म आज इंसान के पसंदीदा मुखौटे बन गए हैं। ऐसी विकट स्थिति में एक आम आदमी की स्थिति बहुत जटिल हो गई है, जीवन समस्या प्रधान हो गया है। आतंकवाद से लगातार जूझती मानवता चिंता के बिछौने पर लेटी है । संप्रदाय और धर्म के नाम पर मानवता का रक्त पानी की तरह बहाया जा रहा है । स्वार्थांध, पशुता की ओर लौटता आज का मानव" विक्षिप्तो का जुलूस "कविता में अपनी स्थिति विचार सकता है'-----

'आता है विक्षिप्तो का जुलूस, निरपराध लोगों को मारता, गृहस्थों, के चेहरे पर थूकता,घर-चौंके तोडता,भीतर का हिंस्र जमा -वमन उगलता ,पशु-सा खड़े-खड़े मूत्र और विष्ठा मन की निकालता।

4"मैं वक्त के हूं सामने, गिरिजा कुमार माथुर, विक्षिप्तों का जुलूस,पृ. 24-25

मानव मूल्यों के इस तरह से होते ह्रास को लेकर प्रत्येक देश आज चिंतित हैं कोई भी शासन प्रणाली संस्कृति और मानवीय आदर्शों की रक्षा करने में असमर्थ जान पड़ती है । औद्योगिक विकास करने के लिए प्राकृतिक स्वरूप

से लगातार छेड़छाड़ से बाढ़ और भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं का आए दिन सामना करना पड़ता है । आज आदमी जिस डाली पर बैठा है, उसी को काटने में लगा है – कवि इस स्थिति से अवगत है और समय रहते सचेत करता है -----

"इंसान मगर धरती को खाना चाह रहा ,जीवन डोरों में आग लगाना चाह रहा , मिट्टी की सूक्ष्म शक्ति को लेकर अग्नि-बीज, वह पृथ्वी को अणु धूम बनाना चाह रहा ,++++++++++वह शुष्क हवा के पर्त जलाने जाता है, सागर खंडों को भाप बनाने जाता है ,ब्रह्माण्ड द्रव्य की चौमुख आंच मशाल उठा, वह अपना नाम निशान मिटाने जाता है।".

5. शिला पंख चमकीले , गिरिजा कुमार माथुर , माटी और मेघ, पृष्ठ 11

विज्ञान और तकनीकी ने आदमी के जीवन को जटिल बना दिया है। आदमी के चिन्तन में विकृति आ गई है। संपूर्ण विश्व पर अपनी प्रभुता स्थापित करने के' लिए हर देश युद्ध में दूसरे देश को परास्त करने के लिए नाना प्रकार से आवधिक,आणविक और रासायनिक हथियारों का अविष्कार करने में तत्पर है। और इस तरह के मानवीय आचरण से संपूर्ण धरित्रि का अस्तित्व खतरे से बाहर नहीं है। कवि इस अनहोनी से होने वाले विनाश को न्योता न देकर जगत की महती भूमिका की स्मृति दिलाना चाहता है। मनुज विरोधी कुटिल षड्यंत्रकारी दांव-पेंच के विरोध में खड़ा कवि कहता है

'लेकिन रोको विनाश के तंत्र जाल !

यह सामूहिक जन मेघ

मृत्यु पर्व देखों

कितने अरबों जन खो, जन

है खडे बीच में बांह खोल रही-----

आवाज़ उठा रही पृथ्वी से

ये बंद करो उन्माद युद्ध का ----

मत डालो धरती पर साया अनु छत्रों का

लिप्सा और निरंकुशता का

मनुज विरोधी पद्धति छोड़ो ।'

6.कल्पान्तर , गिरिजा कुमार माथुर, शांति देश, पृष्ठ110

अपनी युवावस्था में कवि माथुर पूरी तरह प्रणय और रोमांस में, डूबे हुए थे। पर समय के साथ कवि की सांसारिक समझ और अनुसव परिपक्व होने लगी। संसार और सांसारिक लोगों की चिंता भी कवि के कोमल हृदय को सताने लगी।मानवतावादी चेतना का स्वर भी उसमें प्रखर होने लगा। अब प्रेम और प्यार के मोहजाल से निकल कर कवि घर, बाहर, समाज , देश तथा विश्व की नाना समस्याओं से जूझता रहा कवि अब जीवन संघर्षों से जूझता दिखता है। प्रेम के स्वर को अलापना छोड़ कवि कहता है ---

हमको भी ज्ञान विरह का,

और मिलन का

यह मत समझो बरफ बन गया हृदय हमारा

हम मन में सुधि रखकर भी

हैं कर्मशील हम

हैं संघर्षों में डूबे भूलें

हम डटकर जीवन से युद्ध कर रहे प्रतिपल,

आज हमारे सम्मुख और समस्याएं हैं

प्रश्न दूसरे,

घर के, बाहर के , समाज के

मुल्क और दीगर मुल्कों के

7. कल्पान्तर , गिरिजा कुमार माथुर, सम्पादक गाथा, पृष्ठ30

नई कविता के कवि गिरिजा कुमार माथुर जी ने मानव के निरंतर पतन और मानवीय अस्मिता की पहचान के संकट पर अपनी घोर चिंता प्रकट की है। उनकी कविताओं में इंसान दीन और निरीह स्वरूप स्पष्ट देखा जा सकता है किन्तु इस दयनीय मानवीय दशा पर भी कवि मन व्याकुल और निराश नहीं है। इस वक्त के सामने खड़े कवि के आस्था और विश्वास के स्वर अत्यंत प्राब्ल्यमान और गहरे हैं जितने कि निराशा और अनास्था के। कवि इस असीमित विश्वास से सराबोर है कि एक दिन धरती पर सुखद मानवता का सूर्य अवश्य ही अपना झकाझक प्रकाश फैलाएगा। धरा दीप की कुछ पंक्तियां इसका साक्ष्य हैं ---

धरती पर घिरती

अब कभी अमावश की रात काली

तभी नयी संस्कृति की उठती दीवाली

नयी चमक का दीप

लिए कर में वह आती

ऊंची हो जाती है मानवता की बाती

सदियो से इतिहास चक्र

यह अविरल चलता ,

एक दीप हर वक्त ,

अंधेरे में है जलता

मिट्टी का उल्लास अमर है

जीवन विश्वास प्रखर है।

8. धूप के धान, गिरिजाकुमार माथुर, धरा दीप, , पृष्ठ125

प्रकृति और यथार्थ बोध का चित्र खीचते समय माथुर जी का ध्यान पूरी तरह से जीवन के अंधकारमय पक्ष पर अधिक गया है। संसार में भय, संशय, घृणा ,कुंठा, त्रास, अवसाद, दमन, अत्याचार मनुष्यता पर हावी होता जा रहा है । इसी कारण जीवन विद्रूपताओं, विसंगतियों एवं कृत्सित वासनाओं का संधि स्थल बनकर रह गया है। जीवन जैसा है वैसा ही चित्रण कवि ने किया है, पर निराशा से भरकर नहीं।

मानवता पर घिरे इन काले बादलों के बावजूद भी कवि की प्रकाश में गहरी आस्था है। वे कर्मरत रहकर संसार को सुखमय और शांतिमय बनाने के लिए कृतकृत्य संकल्प है, प्राचीन रूढ़ियों और रूग्न परंपराओं को तोड़ डालने के लिए कटिवद्ध है। वह यथार्थ से पलायन में विश्वास नहीं करता। । पृथ्वी कल्प में धरती पर इंसान के विकास और संघर्ष पर आधारित विराट परिकल्पना की सुंदर कहानी रच कवि ने उसका परिचय दिया है। मानव की समस्त विकृतियों पर अच्छाइयों की जीत का गुणगान किया है .धरती की सर्वश्रेष्ठ रचना मानव अवश्य जडवादी पंजों में जकड़ी मानवीय संस्कृति को मुक्त करा ही लेगा कवि का गहरा विश्वास और आस्था का स्वर सम्पादक गाथा में सुंदर रूप में गुंजायमान हो रहा है ---- धरती की सुन्दरतम सृष्टि इन्सान है

-----+-+-++-----+------++--------

जड़वादी पंजों में जकड़ी संस्कृतियों पर

जीत इन्सान की

पृथ्वी की गाथा

इतिहास की कहानी है

9.कल्पान्तर, गिरिजा कुमार माथुर ,सम्पादक गाथा पृष्ठ1 30

गिरिजाकमार माथुर मानवता के कल्याणार्थ चिंतित है, पर हताश नहीं । विकास की अंधी दौड़ में आदमी का सुख चैन खोता जा रहा है। धरती पर अनेकों समस्याएं मुंह बाए खड़ी है पर कवि मानवता और विश्व बंधुत्व की अपनी असीमित आस्था और विश्वास को कमजोर नहीं पड़ने देना चाहता। इस दुष्टि से उनका काव्य चिंतन उत्कृष्ट बन पड़ा है। डा०कूण देव शमी ने इस संबंध में उचित टिप्पणी की है - श्रेष्ठ साहित्य प्रश्न पर नही होता। साहित्य की पृष्ठभूमि मानवीय मूल्यों की है तब किसी एक प्रवृत्ति पर ,पक्ष विशेष तक सीमित होकार या उसमें समाकर नहीं रह , उसके लिए उन सभी जिन का रास्ता मानवीयता ,सामाजिक व्याधि और जीवन भविष्य की आस्था से होकर जाता है ।

. 10छायावादोतर हिन्दी काव्य - डॉ के.डी.शर्मा, पृष्ठ111

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.गिरिजा कुमार माथुर का काव्यानुशीलन , डॉ शारदा राउत, विद्धा प्रकाशन, कानपुर , 2008

2.गिरिजा कुमार माथुर के काव्य में सौंदर्य बोध, हरिराम आलडिया, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ,2015

3. गिरिजा कुमार माथुर: काव्य दृष्टि और अभिव्यंजना, डॉ राहुल, प्रभात प्रकाशन, प्र० स०।

.4गिरिजा कुमार माथुर के काव्य की बनावट और बुनावट -डॉ मधु माहेश्वरी, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद,1988

5.धूप के धान, गिरिजा कुमार माथुर, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली1966

5.कल्पान्तर, गिरिजा कुमार माथुर, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1983 ,प्र०स०

6.छायावादोत्तर हिंदी काव्य, डॉ के.डी.शर्मा और माया अग्रवाल, अनिता प्रकाशन, दिल्ली।

☆☆☆